468वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 40 | प्रथम अंक | अगस्त 2017

इस अंक में...

11 'क्षमा'–भविष्य को सुन्दर बनाने का अचूक उपाय
15 राष्ट्रीय घटनाक्रम
25 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
37 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
44 वैश्विक जनसंख्या परिदृश्य पर संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट : 2024 में भारत सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश होगा
45 नवीनतम सामान्य ज्ञान
49 खेलकूद
52 रोजगार समाचार
54 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
58 सिविल सेवा परीक्षा : सुनिश्चित करें कि आप सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं
63 युवा प्रतिभाएं
70 स्मरणीय तथ्य
74 विश्व परिदृश्य
79 फोकस–सन् 2022 तक कृषकों की आय को दोगुना करना
83 ऐतिहासिक लेख–भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
85 संवैधानिक लेख–भारत के राष्ट्रपति का निर्वाचन
88 सामयिक लेख–इंटरनेट बैंकिंग
91 प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग–'स्मार्ट इण्डिया' योजना में इंटरनेट एवं नए अन्वेषणों की भावी भूमिका
93 राजनीतिक लेख–राजनीतिक एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार : समस्या एवं समाधान
96 आन्तरिक सुरक्षा लेख–आठ सूत्रीय समाधान सिद्धान्त : वामपंथी उग्रवाद रोकथाम अभियान की रणनीति
98 संवैधानिक लेख–भारतीय संविधान का निर्माण, स्रोत एवं विशेषताएं
102 पर्यावरण लेख–पारिस्थितिकी तंत्र की गतिविधियाँ एवं लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट–2016
104 सार संग्रह
108 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन (i) छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा, 2016
114 (ii) उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा, 2016
121 (iii) सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2017
133 डिजिटल बैंकिंग : वस्तुनिष्ठ प्रश्न
135 आर्थिक एवं वाणिज्यिक परिदृश्य : वस्तुनिष्ठ प्रश्न
137 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
139 वार्षिक रिपोर्ट 2016-17– (i) नवी एवं नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में अनुसंधान, विकास, प्रोग्राम्स तथा नई पहलें–एक झलक
142 (ii) जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण क्षेत्र में मुख्य उपलब्धियाँ–एक दृष्टि में
144 तर्कशक्ति–आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक पी.ओ. परीक्षा, 2015
147 संख्यात्मक अभियोग्यता–रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ऑफीसर परीक्षा, 2016
152 अपना ज्ञान बढ़ाइए
153 क्या आप जानते हैं ?
154 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध–शिक्षा की बदहाली : पीढ़ी का विनाश
157 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-457 का परिणाम
158 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक–180
161 वार्षिकी

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

'क्षमा'–भविष्य को सुन्दर बनाने का अचूक उपाय

–साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

''तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहोनातिमानिता ।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ।।''
श्रीमद्भगवद्गीता 3 (16)

तेज, क्षमा, धैर्य, बाहर की शुद्धि एवं किसी में भी शत्रु भाव का न होना और अपने में पूज्यता के अभिमान का अभाव ये सब तो दैवी सम्पदा को लेकर पुरुष के लक्षण हैं.

'क्षमा' इस शब्द से भला कौन परिचित नहीं होगा. यह हम सबके भीतर मौजूद प्रेम तत्व का ही अपर नाम है. जिसके भीतर प्रेम है उसके भीतर क्षमा है ही, क्योंकि प्रेम सहन करना जानता है. प्रेम में स्वीकार भाव (Acceptance) होता है. 'प्रेम' में धीरज गुण भी स्वाभाविक रूप से होता है. 'प्रेम' प्रतीक्षा कर सकता है. 'प्रेम' विनम्र होता है, वह उद्धत और अहंकारी नहीं होता. प्रेम व क्षमा एक ही बात है. 'क्षमा' शब्द का प्रयोग प्रायः हम Forgiveness के अर्थ में करते हैं. किसी को मुआफ करने के अर्थों में करते हैं, किन्तु आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी कहते हैं कि ''क्षमा माफ करना नहीं है, वह सहन करना है.'' ("Kshama is to bear, not to forgive.") क्षमा (To Bear) व माफी (To forgive) दो अलग-अलग अर्थबोधक शब्द है. हमारी समझ में भूल न रहे. क्षमा सहन करने को कहते हैं क्षमा प्रतिक्रिया रहित समभाव से सहन करना है. खमाघणी का अर्थ है मैं आपको बहुत-बहुत सहन करूँ. मुआफ करना सामने वाले के दोष को भुलाने को कहते हैं. श्री विराट गुरुजी कहते हैं कि ''अपने भावों की शुद्धि के लिए 'क्षमा' एक अद्भुत उपाय है. अतीत में किसी ने किसी भी तरह का व्यवहार आपके साथ किया हो अथवा आपके द्वारा कोई भी भूल-चूक हो गई हो, आप उन्हें क्षमा कर दें, व उनसे क्षमा माँग लें. क्षमा करना क्षमा माँगने से भी अधिक कठिन बात है. जब हम किसी को क्षमा कर देते हैं, तो उनके प्रति हमारे दिल-दिमाग में बने अवरोध खुल जाते हैं. क्षमा करने का तात्पर्य उनको अपनी शिकायतों से मुक्त करना है. उन्हें अपराधी नहीं मानना और उनके व्यवहार की त्रुटियों को भी प्रेमपूर्वक सहन कर लेना है, जबकि क्षमा नहीं करने पर हम प्रतिक्रियाशील हो जाते हैं. हम या तो बोलकर अथवा मन ही मन अन्यों की आलोचना, चुगली या विवेचना करते रहते हैं. उनको अन्यथा (Otherwise) होने को कहते हैं. उनके प्रति शिकायतपूर्ण बने रहते हैं, जबकि क्षमा यानि शिकायतों का अभाव''.